इकाई-III

10. साँवले सपनों की याद

रचनाकार

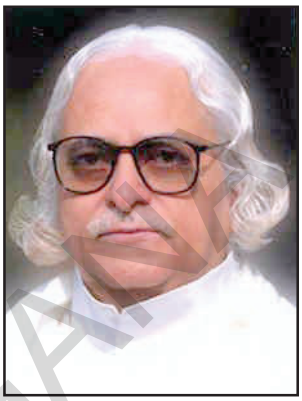

जाबिर हुसैन का जन्म सन् 1945 में गाँव नौनहीं राजगिर, जिला नालंदा, बिहार में हुआ। अंग्रेज़ी भाषा एवं साहित्य के प्राध्यापक रहे। सक्रिय राजनीति में भाग लेते हुए 1977 में मुंगेर बिहार विधानसभा से सदस्य निर्वाचित हुए और मंत्री बने। वे बिहार विधान परिषद के सभापति भी रह चुके हैं।

जाबिर हुसैन हिंदी, उर्दू तथा अंग्रेज़ी-तीनों भाषाओं में समान अधिकार के साथ लेखन करते रहे हैं। उनकी हिंदी रचनाओं में **जो आगे हैं, डोला बीबी का मज़ार, अतीत का चेहरा, लोगां, एक नदी रेत भरी** प्रमुख हैं।

अपने लंबे राजनैतिक-सामाजिक जीवन के अनुभवों में उपस्थित आम आदमी के संघर्षों को उन्होंने अपने साहित्य में प्रकट किया है। संघर्षरत आम आदमी और विशिष्ट व्यक्तित्वों पर लिखी गयी उनकी डायरियाँ चर्चित-प्रशंसित हुई हैं। जाबिर हुसैन ने डायरी विधा में एक अभिनव प्रयोग किया है जो अपनी प्रस्तुति, शैली और शिल्प में नवीन है।

प्रस्तावना प्रसंग

पीपल की ऊँची डाल पर
बैठी चिड़िया गाती है।
तुम्हें ज्ञात अपनी बोली में
क्या संदेश सुनाती है?
उसके मन में लोभ नहीं है,
पाप नहीं परवाह नहीं।
जग का सारा माल हड़प कर
जीने की भी चाह नहीं।

–आरती प्रसाद

प्रश्न

1. कल्पना कीजिए कि पशु-पक्षी इन्सानों के बारे में क्या सोचते होंगे?
2. पक्षियों को लोभ क्यों नहीं होता?
3. हम प्रकृति का आनंद किस प्रकार उठा सकते हैं?

भूमिका

प्रस्तुत पाठ जून 1987 में प्रसिद्ध पक्षी विज्ञानी सालिम अली की मृत्यु के तुरंत बाद डायरी शैली में लिखा गया संस्मरण है। सालिम अली की मृत्यु से उत्पन्न दुख और अवसाद को लेखक ने **साँवले सपनों की याद** के रूप में व्यक्त किया है। सालिम अली का स्मरण करते हुए लेखक ने उनका व्यक्ति-चित्र प्रस्तुत किया है। यहाँ भाषा की रवानी और अभिव्यक्ति की शैली दिल को छूती है ।

SCERT TELANGANA

सुनहरे परिंदों के खूबसूरत पंखों पर सवार साँवले सपनों का एक हुजूम मौत की खामोश वादी की तरफ अग्रसर है। कोई रोक-टोक सके, कहाँ संभव है।

इस हुजूम में आगे-आगे चल रहे हैं, सालिम अली। अपने कंधों पर, सैलानियों की तरह अपने अंतहीन सफ़र का बोझ उठाए। लेकिन यह सफ़र पिछले तमाम सफ़रों से भिन्न है। भीड़-भाड़ की ज़िंदगी और तनाव के माहौल से सालिम अली का यह आखिरी पलायन है। अब तो वो उस वन-पक्षी की तरह प्रकृति में विलीन हो रहे हैं, जो ज़िंदगी का आखिरी गीत गाने के बाद मौत की गोद में जा बसा हो। कोई अपने जिस्म की हरारत और दिल की धड़कन देकर भी उसे लौटाना चाहे तो वह पक्षी अपने सपनों के गीत दोबारा कैसे गा सकेगा!

मुझे नहीं लगता, कोई इस सोए हुए पक्षी को जगाना चाहेगा। वर्षों पूर्व, खुद सालिम अली ने कहा था कि लोग पक्षियों को आदमी की नज़र से देखना चाहते हैं। यह उनकी भूल है, ठीक उसी तरह, जैसे जंगलों और पहाड़ों, झरनों और आबशारों को वो प्रकृति की नज़र से नहीं, आदमी की नज़र से देखने को उत्सुक रहते हैं। भला कोई आदमी अपने कानों से पक्षियों की आवाज़ का मधुर संगीत सुनकर अपने भीतर रोमांच का सोता (फव्वारा) फूटता महसूस कर सकता है?

एहसास की ऐसी ही एक ऊबड़-खाबड़ ज़मीन पर जन्मे मिथक का नाम है, सालिम अली।

पता नहीं, इतिहास में कब कृष्ण ने वृंदावन में रासलीला रची थी और शोख गोपियों को अपनी शरारतों का निशाना बनाया था। कब माखन भरे भाँड़े फोड़े थे और दूध-छाली से अपने मुँह भरे थे। कब वाटिका में, छोटे-छोटे किंतु घने पेड़ों की छाँह में विश्राम किया था। कब दिल की धड़कनों को एकदम से तेज़ करने वाले अंदाज़ में बंसी बजाई थी। और, पता नहीं, कब वृंदावन की पूरी दुनिया संगीतमय हो गई थी। पता नहीं, यह सब कब हुआ था। लेकिन कोई आज भी वृंदावन जाए तो नदी का साँवला पानी उसे पूरे घटना-क्रम की याद दिला देगा। हर सुबह, सूरज निकलने से पहले, जब पतली गलियों से उत्साह भरी भीड़ नदी की ओर बढ़ती है, तो लगता है जैसे उस भीड़ को चीरकर अचानक कोई सामने आएगा और बंसी की आवाज़ पर सब किसी के कदम थम जाएँगे। हर शाम सूरज ढलने से पहले, जब

SCERT TELANGANA

वाटिका का माली सैलानियों को हिदायत देगा तो लगता है जैसे बस कुछ ही क्षणों में वो कहीं से आ टपकेगा और संगीत का जादू वाटिका के भरे-पूरे माहौल पर छा जाएगा। वृंदावन कभी कृष्ण की बाँसुरी के जादू से खाली हुआ है क्या?

मिथकों की दुनिया में इस सवाल का जवाब तलाश करने से पहले एक नज़र कमज़ोर काया वाले उस व्यक्ति पर डाली जाए जिसे हम सालिम अली के नाम से जानते हैं। उम्र को शती तक पहुँचने में थोड़े ही दिन तो बच रहे थे। संभव है, लंबी यात्राओं की थकान ने उनके शरीर को कमज़ोर कर दिया हो, और कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी उनकी मौत का कारण बनी हो। लेकिन अंतिम समय तक मौत उनकी आँखों से वह रोशनी छीनने में सफल नहीं हुई जो पक्षियों की तलाश और उनकी हिफ़ाज़त के प्रति समर्पित थी। सालिम अली की आँखों पर चढ़ी दूरबीन उनकी मौत के बाद ही तो उतरी थी।

उन जैसा 'बर्ड वाचर' शायद ही कोई हुआ हो। लेकिन एकांत क्षणों में सालिम अली बिना दूरबीन भी देखे गए हैं। दूर क्षितिज तक फैली ज़मीन और झुके आसमान को छूने वाली उनकी नज़रों में कुछ-कुछ वैसा ही जादू था, जो प्रकृति को अपने घेरे में बाँध लेता है। सालिम अली उन लोगों में थे जो प्रकृति के प्रभाव में आने के बजाए प्रकृति को अपने प्रभाव में लाने के कायल होते हैं। उनके लिए प्रकृति में हर तरफ एक हँसती-खेलती रहस्य भरी दुनिया पसरी थी। यह दुनिया उन्होंने बड़ी मेहनत से अपने लिए गढ़ी थी। इसके गढ़ने में उनकी जीवन-साथी तहमीना ने काफ़ी मदद पहुँचाई थी। तहमीना स्कूल के दिनों मे उनकी सहपाठी रही थीं।

अपने लंबे रोमांचकारी जीवन में ढेर सारे अनुभवों के मालिक सालिम अली एक दिन केरल की 'साइलेंट वैली' को रेगिस्तानी हवा के झोंकों से बचाने का अनुरोध लेकर चौधरी चरण सिंह से मिले थे। वे प्रधानमंत्री थे। चौधरी साहब गाँव की मिट्टी पर पड़ने वाली पानी की पहली बूँद का असर जानने वाले नेता थे। पर्यावरण के संभावित खतरों का जो चित्र सालिम अली ने उनके सामने रखा, उसने उनकी आँखें नम कर दी थीं।

आज सालिम अली नहीं हैं। चौधरी साहब भी नहीं हैं। कौन बचा है, जो अब सोंधी माटी पर उगी फसलों के बीच एक नए भारत की नींव रखने का संकल्प लेगा? कौन बचा है, जो अब हिमालय और लद्दाख की बरफ़ीली ज़मीनों पर जीने वाले पक्षियों की वकालत करेगा?

SCERT TELANGANA

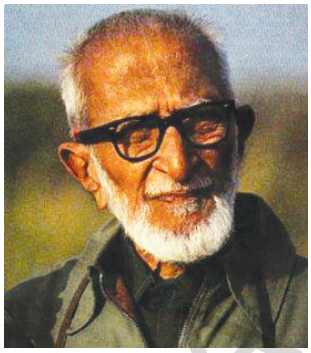

सालिम अली ने अपनी आत्मकथा का नाम रखा था 'फाल ऑफ ए स्पैरो' (Fall of a Sparrow) मुझे याद आ गया, डी एच लॉरेंस की मौत के बाद लोगों ने उनकी पत्नी फ्रीडा लॉरेंस से अनुरोध किया कि वह अपने पति के बारे में कुछ लिखें। फ्रीडा चाहती तो ढेर सारी बातें लॉरेंस के बारे में लिख सकती थीं। लेकिन उसने कहा- मेरे लिए लॉरेंस के बारे में कुछ लिखना असंभव-सा है। मुझे महसूस होता है, मेरी छत पर बैठने वाली गोरैया लॉरेंस के बारे में ढेर सारी बातें जानती है। मुझसे भी ज्यादा जानती है। वो सचमुच इतना खुला-खुला और सादा-दिल आदमी था। मुमकिन है, लॉरेंस मेरी रगों में, मेरी हड्डियों में समाया हो। लेकिन मेरे लिए कितना कठिन है, उसके बारे में अपने अनुभवों को शब्दों का जामा पहनाना। मुझे यकीन है, मेरी छत पर बैठी गोरैया उसके बारे में, और हम दोनों ही के बारे में, मुझसे ज़्यादा जानकारी रखती है।

जटिल प्राणियों के लिए सालिम अली हमेशा एक पहेली बने रहेंगे। बचपन के दिनों में, उनकी एयरगन से घायल होकर गिरने वाली, नीले कंठ की वह गोरैया सारी ज़िंदगी उन्हें खोज के नए-नए रास्तों की तरफ ले जाती रही। ज़िंदगी की ऊँचाइयों में उनका विश्वास एक क्षण के लिए भी डिगा नहीं। वो लॉरेंस की तरह नैसर्गिक ज़िंदगी का प्रतिरूप बन गये थे।

सालिम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने की बजाए अथाह सागर बनकर उभरे थे। जो लोग उनके भ्रमणशील स्वभाव और उनकी यायावरी से परिचित हैं, उन्हें महसूस होता है कि वो आज भी पक्षियों के सुराग में ही निकले हैं, और बस अभी गले में लंबी दूरबीन लटकाए अपने खोजपूर्ण नतीजों के साथ लौट आएँगे।

जब तक वो नहीं लौटते क्या उन्हें गया हुआ मान लिया जाए!

मेरी आँखें नम हैं, सालिम अली, तुम लौटोगे ना!

SCERT TELANGANA

प्रश्न–अभ्यास

अर्थग्राह्यता–प्रतिक्रिया

❖ विचार–विमर्श

1. कोई कुत्ता, बिल्ली अथवा खरगोश तो कोई तोता, कबूतर अथवा मुर्गी पालना पसंद करते हैं? आपको कौनसा पशु या पक्षी पालना पसंद है? और क्यों?
2. पक्षी कीड़े–मकोड़ों को खा जाते हैं, जिससे हमारी फसलें सुरक्षित रहती हैं। इसी प्रकार चर्चा कीजिए कि पक्षी पर्यावरण के संरक्षण में किस प्रकार सहायक हैं?

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. किस घटना ने सलीम अली के जीवन की दिशा बदल दी और उन्हें पक्षी प्रेमी बना दिया?
2. पाठ पढ़कर उन वाक्यों को रेखांकित कीजिए जिन्हें पर्यावरण के संभावित खतरों को चित्रित करने के लिए सलीम अली ने तत्कालीन प्रधानमंत्री के सामने प्रस्तुत किया।
3. पाठ पढ़िए। सही विकल्प चुनिए।

   i. सलीम अली कौन से हुजूम में चल रहे हैं?

   क. यात्रियों का हुजूम　　ख. विद्यार्थियों का हुजूम

   ग. साँवले सपनों का हुजूम　　घ. सुनहरे पक्षियों का हुजूम

   ii. भीड़ को चीरकर अचानक कोई सामने आएगा। इस पंक्ति में कोई कौन है?

   क. सलीम अली　　ख. लेखक

   ग. प्रधानमंत्री　　घ. कृष्ण

   iii. सलीम अली को किससे प्यार था?

   क. प्रकृति　　ख. जीवन

   ग. प्राणी　　घ. वनस्पति

   iv. सलीम अली के लिए प्रकृति में हर तरफ कैसी दुनिया पसरी थी?

   क. वैभवपूर्ण दुनिया　　ख. सुनहरी दुनिया

   ग. सौंदर्यपूर्ण दुनिया　　घ. हँसती–खेलती दुनिया

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. लेखक ने सलीम अली की मृत्यु के बाद लिखे प्रस्तुत संस्मरण का शीर्षक 'साँवले सपनों की याद' क्यों रखा होगा?

SCERT TELANGANA

2. सलीम अली ने यह क्यों कहा कि लोग पक्षियों को आदमी की नज़र से देखना चाहते हैं?
3. आशय स्पष्ट कीजिए।

   क. वो लारेंस की तरह नैसर्गिक ज़िंदगी का प्रतिरूप बन गए थे।

   ख. कोई अपने जिस्म की हरारत और दिल की धड़कन देकर भी उसे लौटाना चाहे तो वह पक्षी अपने सपनों के गीत दुबारा कैसे गा सकेगा!

   ग. सलीम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने के बजाय अथाह सागर बनकर उभरे थे।
4. सलीम अली के निधन से पूर्व की उनकी परिस्थिति पर लेखक ने किस प्रकार प्रकाश डाला?
5. "मेरी छत पर बैठने वाली गौरैया लारेंस के बारे में ढेर सारी बातें जानती है।" लारेंस की पत्नी फ्रीडा ने ऐसा क्यों कहा होगा?

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

गद्यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

आकाश में रंग-बिरंगे फूलों की घटाओं के समान उड़ते हुए और वीणा, वंशी, मुरज, जलतरंग आदि का वृंदवादन (आर्केस्ट्रा) बजाते हुए पक्षी कितने सुंदर जान पड़ते हैं। मनुष्य ने बंदूक उठायी, निशाना साधा और कई गाते-उड़ते पक्षी धरती पर ढेले के समान आ गिरे। किसी की लाल-पीली चोंच वाली गर्दन टूट गई है, किसी के पीले सुंदर पंजे टेढ़े हो गये हैं और किसी के इंद्रधनुषी पंख बिखर गये हैं। क्षत-विक्षत रक्तस्नात उन मृत-अर्द्धमृत लघुगीतों में न अब संगीत है न सौंदर्य। परंतु तब भी मारनेवाला अपनी सफलता पर नाच उठता है।

पक्षी जगत में ही नहीं पशु जगत में भी मनुष्य की ध्वंसलीला ऐसी ही निष्ठुर है। पशुजगत में हिरन जैसा निरीह और सुंदर दूसरा पशु नहीं है। उसकी आँखें तो मानो करुणा की चित्रलिपि है। परंतु इसका भी गतिमय सजीव सौंदर्य मनुष्य का मनोरंजन करने में असमर्थ है। मानव को जो जीवन का श्रेष्ठतम रूप है जीवन के अन्य रूपों के प्रति इतनी वितृष्णा और विरक्ति और मृत्यु के प्रति इतना मोह और इतना आकर्षण क्यों?

– महादेवी वर्मा (सोना हिरणी)

1. शिकारी मनुष्य अपनी किस सफलता पर नाच उठता है?
2. लेखिका ने हिरण के आँखों की तुलना किससे की है?
3. लेखिका ने जीवन का श्रेष्ठतम रूप किसे माना है?

SCERT TELANGANA

अभिव्यक्ति–सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार–पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. कुछ लोग पक्षियों का शिकार करके अपने घरों की शोभा बढ़ाते हैं। इस संदर्भ में आप अपने विचार प्रकट करें।
2. पक्षियों के निरीक्षक अथवा बर्ड वॉचर की गतिविधियों के बारे में आप क्या जानते हैं?
3. प्रस्तुत पाठ सलीम अली की पर्यावरण के प्रति चिंता को भी व्यक्त करता है। पर्यावरण को बचाने के लिए आप कैसे योगदान दे सकते हैं?

ख. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ–दस वाक्यों में लिखिए।

1. इस पाठ के आधार पर लेखक की भाषा शैली की विशेषताएँ बताइए।
2. इस पाठ के लेखक ने सलीम अली के व्यक्तित्व का जो चित्र खींचा है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।
3. सलीम अली की अंतिम यात्रा का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

❖ सृजनात्मक कार्य

टी.वी. के विभिन्न चैनलों जैसे– एनिमल किंगडम, डिस्कवरी चैनल, एनिमल प्लानेट आदि पर दिखाये जानेवाले कार्यक्रम देखकर समाचार पत्र में छापने के लिए एक लेख तैयार कीजिए।

❖ प्रशंसा

लेखक ने मानव की एक भूल पर प्रकाश डालते हुए लिखा है– जंगलों और पहाड़ों, झरनों और आबशारों को वह प्रकृति की नज़र से नहीं आदमी की नज़र से देखने को उत्सुक रहते हैं। मनुष्य प्रकृति को अपनी उपयोगिता की दृष्टि से देखेगा तो उसमें बिगाड़ आना स्वाभाविक है। इसमें सुधार के सुझाव दीजिए।

भाषा की बात

रेखांकित शब्द-समूहों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

1. सुनहरे परिंदों के खूबसूरत पंखों पर सवार **साँवले सपनों** का एक हुजूम मौत की **खामोश वादी** की तरफ अग्रसर है।
2. **भीड़–भाड़ की ज़िन्दगी** और **तनाव के माहौल** से सलीम अली का ये **आखिरी पलायन** है।
3. दूर **क्षितिज तक फैली** ज़मीन और झुके आसमान को छूनेवाली उनकी नज़रों में कुछ–कुछ वैसा ही जादू था जो प्रकृति को अपने घेरे में बाँध लेता है।

परियोजना कार्य

अपने घर या विद्यालय के नज़दीक आपको अक्सर किसी पक्षी को देखने का मौका मिलता होगा। उस पक्षी का नाम, भोजन, खाने का तरीका, रहने की जगह आदि के आधार पर एक चित्रात्मक विवरण तैयार करें।

SCERT TELANGANA